Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 7.384
Volume - 8, Issue - 5, May - 2025

DOIs:10.2018/SS/202505016 --:-- Research Paper / Article / Review

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों के लिए निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता

देश दीपक
आईसीएसएसआर शोध अध्येता, शिक्षा विभाग छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर
ई-मेल – ddesh619@gmail.com

सारांश : *शिक्षा मानव विकास की एक गतिशील प्रक्रिया है। जिसमें निर्देशन एवं परामर्श भी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य को स्वयं का सर्वांगीण विकास करने में अपनी बुद्धि व विवेक के साथ-साथ अन्य दूसरों की भी सहायता लेनी पड़ती है। अर्थात् दूसरे व्यक्ति के अनुभव, बुद्धि व विवेक की सहायता लेता है तो इस प्रकार की सहायता निर्देशन एवं परामर्श कहलाती है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में निर्देशन एवं परामर्श की विद्यार्थियों के लिए महती आवश्यकता है क्योंकि वर्तमान समय में विद्यार्थी सोशल मीडिया के भंवर जाल में निरन्तर फँसता जा रहा है तथा साथ ही बढ़ती बेरोजगारी के कारण विद्यार्थी शैक्षिक, व्यावसायिक, सांवेगिक, मानसिक तथा आजीविका हेतु द्वन्द की अवस्था में रहता है। इस प्रकार की अवस्थाओं और अवसरों पर विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान करने हेतु विद्यार्थियों को निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है तथा विद्यार्थी को इस योग्य भी बनाना है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान करने में स्वयं सक्षम हो। इस प्रकार से विद्यार्थी उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर तथा स्वयं को समस्या समाधान हेतु योग्य होकर अपने आप को द्वन्द की अवस्था से बाहर निकालकर अपने आप को समायोजित करता है। जिससे वह अपनी रुचि, योग्यता एवं अभियोग्यता के अनुरूप कार्य कर सकेगा।*

मुख्य बिन्दु: वर्तमान परिप्रेक्ष्य, विद्यार्थी, निर्देशन, परामर्श, आवश्यकता।

1. प्रस्तावना :

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के मन में बहुत अधिक निराशा एवं असंतोष है। विद्यार्थियों के मन में अपनी शिक्षा, कार्य कुशलता, व्यवसाय एवं रोजगार को लेकर अनिश्चितता की स्थिति व्याप्त है। विद्यार्थी अपने भविष्य की स्थिति का निश्चय न होने के कारण एवं हर प्रकार से मानसिक द्वन्द में रहने के कारण तनाव की स्थिति में है जो कि वह उनके समाज में असमायोजन को जन्म देता है। विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थियों को हर स्तर पर शिक्षा संबंधी बहुत सी समस्यायें आती हैं इन समस्याओं को लेकर विद्यार्थी निराकरण करने की स्थिति में स्वयं को असमर्थ पाते हैं। इसका कारण उन्हें कोई उपयुक्त साधन या माध्यम नहीं दिखाई पड़ते, जिससे वह अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकें। ऐसी स्थिति में विद्यार्थियों को शिक्षक, अभिभावक एवं समाज के अन्य व्यक्तियों से निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। निर्देशन एवं परामर्शदाता के उचित मार्गदर्शन द्वारा ही विद्यार्थियों की समस्याओं का निराकरण सहजता से किया जा सकता है।

वर्तमान कम्प्यूटर युग में बढ़ती प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी के कारण जहाँ जीवन के हर क्षेत्र में सुविधायें प्राप्त हुई हैं। चाहे वह चिकित्सा का क्षेत्र हो, शिक्षा का, व्यापार का एवं सैन्य का आदि, हर क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन होकर सुविधायें प्रदान की हैं। वहीं प्रौद्योगिकी एवं तकनीकी एक ओर जहां लाभकारी प्रतीत हुई वहीं दूसरी तरफ सोशल मीडिया की तरफ विद्यार्थियों के बढ़ते रूझान से जहां वह लाभप्रद होने के बजाय दिग्भ्रमित होते चले जा रहे हैं। विद्यार्थियों पर सोशल मीडिया का प्रभाव बहुत ही गहन है। यह वह समय होता है जब विद्यार्थी सबसे ज्यादा सपने देखता है और अपने सपनों को पूरा करने के लिए जी-जान लगाने की कोशिश करता है। आधुनिक

समय में विद्यार्थी एवं सोशल मीडिया एक-दूसरे से जुड़ गये हैं। जहां एक तरफ सोशल मीडिया विद्यार्थियों के सपनों को एक नयी दिशा दे सकते हैं। वहीं दूसरी तरफ विद्यार्थियों को सोशल नेटवर्किंग साइट्स का एक नशा सा हो गया है **(नरूका, 2018)**। अतः इन समस्याओं से अवगत होकर शोध पत्र में विद्यार्थियों के लिए निरन्तर निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता को इंगित किया गया है।
भारत में प्राचीन काल से ही निर्देशन प्रक्रिया समाहित रही है। जोकि समय-समय तात्कालिक ब्राम्हणों, पुरोहितों एवं गुरुजनों द्वारा विद्यार्थियों को प्राप्त होती रही हैं। जिस प्रकार से महाभारत काल में श्री कृष्ण जी ने अर्जुन को निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर मार्गदर्शन दिया था उसका साक्षात् प्रमाण 'गीता ग्रन्थ' है **(राजकुमार, 2014)**। प्राचीन काल में निर्देशन एवं परामर्श के द्वारा जो प्रयास सर्वत्र विकास के लिये प्रस्तुत किये गये थे वे आज भी हमारे समाज में अनुकरणीय हैं। चाहे वह भारतीय समाज के अस्तित्व को बनाये रखने एवं उसमें निरन्तर प्रगति लाने के लिये समाज के अग्रदूतों द्वारा प्रयास हों, जैसे नैतिक उपदेश, व्यवसाय एवं कार्य, कर्तव्य एवं मूल्य के विधान। वहीं दूसरी तरफ विद्यार्थियों के पग-पग पर निर्देशन करने की प्रवृत्ति हो। विद्यार्थी गुरुकुलों में रहकर अपने भविष्य का निर्माण करता था। ब्रह्मचर्य जीवन से उसे शक्ति एवं प्रेरणा मिलती थी, गुरुजनों के आर्शीवाद और अभिप्रेरित सहयोग से विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में भी निर्देशन प्राप्त करता रहता था अतः इस प्रकार से प्राचीन काल में निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था व प्रक्रिया सर्वत्र दृष्टिगोचर होती थी। लेकिन अलग से निर्देशन एवं परामर्श की व्यवस्था एक विषय के रूप में नहीं पाई जाती थी। बल्कि निर्देशन एवं परामर्श शिक्षा में ही समाहित होकर शिक्षा के प्रत्येक क्षेत्र में पाई जाती थी।

2. प्राचीन भारतीय साहित्य में निर्देशन एवं परामर्श का विवेचन –

भारतीय ग्रन्थों में निर्देशन एवं परामर्श की उपस्थिति के संकेत मिलते हैं जो इस प्रकार से हैं-
कठोपनिषद् में नचिकेता का परामर्श यमराज द्वारा सुन्दर शैली में सम्पन्न हुआ, प्रश्नोपनिषद् में पित्पलाद ऋषि द्वारा कात्यायन को, तैत्तिरीय उपनिषद् कृष्ण यजुर्वेद में वैश्यमपायन ऋषि ने याज्ञवल्क्य को उपदेश के माध्यम से परामर्श दिया, वहीं महाभारत का श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया निर्देशन एवं परामर्श सर्वविदित है, भीष्म द्वारा पाण्डवों को परामर्श दिया गया, नारद द्वारा युधिष्ठिर को दिया गया परामर्श, श्रीराम द्वारा पुरवासियों को दिया गया परामर्श, शंकराचार्य के प्रसिद्ध ग्रंन्थ सौन्दर्य लहरी में परामर्श का रूप दिखाई देता है, तुलसीदास का मनुष्यों को दिया गया निर्देशन एवं परामर्श, कहते हैं कि ''बड़े भाग मानुष तन पावा, सुर दुर्लभ अब ग्रन्थहि गावा'', सन्त काव्य में कबीरदास, रविदास, पीपा, दादू दयाल, मीराबाई, मलूकदास, सूरदास एवं अन्य सन्तों में लोकहित के लिए परामर्श की भावना रही है, विष्णुशर्मा की पंचतन्त्र की कहानियों में पशु पक्षियों के माध्यम से निर्देशन एवं परामर्श का रूप दिखाई देता है **(राजकुमार, 2014)**।
इस प्रकार विदित होता है कि निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता प्राचीन काल से रही है। हर एक व्यक्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता प्रतीत होती है और उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर समस्याओं के निराकरण हेतु स्वयं को सक्षम बनाता है।
विद्यार्थियों को निरन्तर निर्देशन एवं परामर्श दिये जाने की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई उद्देश्य होता है, जिन कार्यों के उद्देश्य निश्चित होती हैं, उनमें विद्यार्थी रुचि लेता है तथा सफलता की सम्भावना अधिक बनी रहती है। तथापि जिन कार्यों का उद्देश्य निश्चित नहीं होता है तो उन कार्यों को करने में विद्यार्थी रुचि नहीं लेता है तथा वह कार्य भी सुनियोजित ढंग से नहीं करता है। निर्देशन एवं परामर्श का उद्देश्य निश्चित होना चाहिए क्योंकि यह उद्देश्य विद्यार्थी को जीवन की प्रत्येक कठिनाइयों में बुद्धिमत्तापूर्ण चयन करने में सक्षम बनाते हैं।

निर्देशन एवं परामर्श के उद्देश्य एवं कार्य निम्न प्रकार से हो सकते हैं-

1. विद्यार्थियों को अपनी अन्तःशक्तियों को समझने में सक्षम बनाना।
2. पाठ्यक्रम चयन में सहायता करना।
3. व्यावसायिक उद्देश्यों की पूर्ति करने एवं चयन करने में सहायता करना।
4. स्वास्थ्य समायोजन करने में सहायता करना।

5. उपलब्धा संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने में सहायता प्रदान करना।
6. विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम के प्रति सही अभिरुचि विकसित करने में सहायता करना।
7. अध्ययन सम्बन्धी आदतों के विकास में सहायता करना।

3. निर्देशन एवं परामर्श की प्रकृति -

विदित है कि संसार की श्रेष्ठतम् कृति मानव है। भाषा, बुद्धि और विवेक आदि जैसे गुणों से सम्पन्न मानव विकास पथ पर जब आगे बढ़ता है तो उसे कदम-कदम पर निरन्तर निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता होती है। निर्देशन एवं परामर्श का लक्ष्य मानव को उद्देश्य पूर्ण बनाना है जैसाकि उपरोक्त वर्णित उद्देश्यों को इंगित किया गया है। निर्देशन एवं परामर्श किसी भटके हुए प्राणी या राही को रास्ता दिखाने जैसा ही है।

निर्देशन एवं परामर्श जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। यह एक बहु आयामी प्रक्रिया है। निर्देशन एवं परामर्श जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शैक्षिक, व्यावसायिक, राजनीतिक, संवेगात्मक, कलात्मक एवं वैयक्तिक आवश्यकता पड़ती ही है। वर्तमान युग अपेक्षाकृत अधिक जटिल होता जा रहा है। तकनीकी एवं सोशल मीडिया के निरन्तर विकास ने इस जटिलता को और भी आगे बढ़ा दिया है। एक ओर यह हमारी सामर्थ्य को बढ़ाकर और अधिक सुविधाजनक और उपयोगी बना दिया है तथा कार्य करने की प्रक्रिया को सरल किया है, नई-नई तकनीकी एवं कौशलों को जन्म दिया है। वहीं इसके सही से उपयोग न कर पाने और दुरूपयोग के कारण असमंजस की स्थिति में डाल दिया है। अतः इस स्थिति में खासकर विद्यार्थियों के लिए निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। यद्यपि निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता जन्म से मृत्यु पर्यन्त तक प्रत्येक युग में रही ही है। तथापि जटिलताओं के वर्तमान युग में, परिवर्तन के युग में निर्देशन एवं परामर्श की और अधिक आवश्यकता है। अतः विद्यार्थियों के लिए निर्देशन एवं परामर्श; जल एवं ऑक्सीजन की तरह अनिवार्य हो गया है।

प्रस्तुत लेख में वर्तमान समय में सोशल मीडिया एवं तकनीकी के बढ़ते युग में विद्यार्थियों को निर्देशन एवं परामर्श शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यक्तिगत प्रकार से आवश्यकता प्रतीत होती है। जिसके लिए निम्न प्रकार से चर्चा की गई है-

4. विद्यार्थियों हेतु निर्देशन एवं परामर्श के मुख्य अवयव -

शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श –

शिक्षा मनुष्य को पशुओं से अलग करती है। लेकिन ऐसा नहीं हो सकता कि प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक प्रकार की विद्या प्राप्त ही कर ले और किसी भी विषय का चयन कर उसमें सफल भी हो जाये। वर्तमान समय में जो हम बेरोजगारों की भीड़ देख रहे हैं उसका एक प्रमुख कारण रूचि, योग्यता और क्षमता का आँकलन किये बिना किसी भी विषय में अध्ययन कर लेना। अतः शिक्षा के क्षेत्र में विद्यार्थियों के लिए निरन्तर उपयुक्तत विषय के चयन, कक्षा कक्ष व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाने, उपयुक्त अध्ययन विधि का चयन, श्रेष्ठ पुस्तकों और साहित्य के चयन, परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए समुचित तैयारी के लिए, अपव्यय एवं अवरोधन को रोकने में, नैतिक मूल्यों एवं प्रतिभा संरक्षण हेतु, प्रतिभा एवं कला का समुचित उपयोग करने की अन्य गतिविधियों हेतु अर्थात् प्रत्येक चरण में निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता अनुभव प्रतीत होती है। अतः शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा शैक्षिक कार्यक्रम का नियोजन करने में सहायता करने से है, जिससे शैक्षिक कार्यक्रम समाज और व्यक्तिगत लाभार्थ सफलतापूर्वक पूर्ण हो।

व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श –

विद्यार्थी दैनिक जीवन में समाज में रहते हुए जीवन के प्रत्येक स्तर पर पग-पग दूसरों से सीखता रहता है, कोई भी ऐसा कार्य नहीं जो दूसरों की सहायता बिना सीखता हो। धीरे-धीरे वह अनुभव के आधार पर कार्यों को करने में स्वयं ही सक्षम हो जाता है। लेकिन विदित है कि जीवन की परिस्थितियों में निरन्तर परिवर्तन होता रहता है, नये-नये संघर्षों से सामना करना पड़ता है, नवीन कार्यों को सीखना पड़ता है, नये तकनीकों एवं कौशलों से परिचित होना पड़ता है। अतः जीवन भर निर्देशन की आवश्यकता होती है। व्यक्तिगत निर्देशन विद्यार्थी को भौतिक तथा सामाजिक वातावरण के साथ अच्छी प्रकार से समायोजन करने में मदद करता है, वैयक्तिक क्षमताओं के

विकास हेतु मदद करता है, पारिवारिक जीवन में स्वयं को स्थापित करने में, सामाजिक समायोजन स्थापित करने में, शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने में, विद्यार्थियों को तनाव से भरे हुए किशोरावस्था के समय में उसकी संवेगात्मक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं को नियंत्रण करने में निर्देशन एवं परामर्श सहायता करता है।

व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श -

बालक का व्यक्तिगत एवं शैक्षिक जीवन व्यावसायिक जीवन की आधारशिला है। घर, परिवार एवं विद्यालय मिलकर बालक को जीवन यापन के लिए तैयार करते हैं जिससे वह समाज के लिए एक उपयोगी नागरिक बनकर तैयार हो। अतः विद्यार्थियों को व्यक्तिगत भिन्नताओं के अनुसार उचित व्यवसाय के चयन में सहायक, विद्यार्थी की रूचि एवं क्षमता के अनुरूप व्यवसाय के चयन में सहायक, व्यवसाय के लिए तैयारी कर प्रवेश करने तथा प्रगति एवं व्यावसायिक क्षमताओं के विकास करने, विद्यार्थियों को विभिन्न व्यवसायों से परिचित कराने में, व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की जानकारी देने में, व्यवसाय के प्रति अनुकूलन के लिए, व्यवसाय के लिए ईमानदारी, रूचि एवं समर्पण की भावना के विकास करने में, तकनीकी जटिलताओं का सामना करने में, संसाधनों एवं तकनीकी का समुचित प्रयोग करने में एवं परिस्थिति परिवर्तन में सहायक आदि की प्रक्रिया व्यावसायिक निर्देशन एवं परामर्श के अन्तर्गत आवश्यक प्रतीत होती है।

5. निष्कर्ष -

मनुष्य एक सभ्य प्राणी है, सभ्यता का स्वरूप मनुष्य द्वारा किये गये सदियों के अभ्यास के परिणाम स्वरूप आया। आज का मानव तमाम सुविधाओं के पश्चात् भी स्वयं को समस्याग्रस्त पाता है। आदिकाल से वर्तमान समय तक की चर्चा करें तो पाते हैं कि व्यक्ति जब भी समस्याओं से ग्रस्त होता है तो वह निर्देशन एवं परामर्श के लिए अपने से अनुभवी, सलाहकार की ओर बढ़ता है। यही निर्देशन एवं परामर्श है।

जटिल एवं तकनीकी, सोशल मीडिया युग ने प्राणी जगत खासकर विद्यार्थियों के लिए निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता को और भी बढ़ा दिया है। वैश्वीकरण एवं भौतिकतावादी युग में जब विद्यार्थी शिक्षा एवं रोजगार हेतु सम्पूर्ण विश्व में जा रहा है, प्रतिस्पर्धा के इस युग में विद्यार्थी शिक्षा एवं व्यवसाय के लिए बहुत सी परेशानियों या समस्याओं से स्वयं को उलझा हुआ पाता है, तब विद्यार्थी तमाम भौतिक सुविधाओं के पश्चात् भी संवेगात्मक रूप से कमजोर, संवेदनहीन, अकेला व स्वार्थी होते जा रहा है। इस प्रकार विद्यार्थी को मुख्यतः व्यैक्तिक, शैक्षिक एवं व्यवसाय हेतु अनेकानेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है अतः समस्याओं के निवारण हेतु एवं इस योग्य बनाना कवह समस्याओं का निराकरण स्वयं करने में सक्षम हो सके। इसके लिए विद्यार्थियों को निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. चौहान, एम. (2002). *माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक निर्देशन की आवश्यकता तथा स्थिति का आलोचनात्मक मूल्यांकन*. अप्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र (प्रशिक्षण). सी.एस.जे.एम.यू. कानपुर. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/259166
2. नरूका, एस. (2018). सोशल मीडिया का युवाओं पर प्रभाव. *इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 6*(1). 292-296. Retrieved from https://ijcrt.org/papers/IJCRT1801327.pdf
3. पाल, के. (n.d). *निर्देशन एवं परामर्श.* लवली प्रोफेश्नल यूनिवर्सिटी. Retrieved from https://ebooks.lpude.in/arts/ma_education/year_2/DEDU502_GUIDANCE_AND_COUNSELING_HINDI.pdf
4. राजकुमार (2014). श्रीभगवद्गीता में शाश्वत शैक्षिक मूल्यों की निर्देशन एवं परामर्श के सन्दर्भ में मीमांसा. अप्रकाशित पी-एच.डी. शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र. एम.जे.पी.आर.यू. बरेली. Retrieved from http://hdl.handle.net/10603/328895

- *निर्देशन एवं परामर्श.* उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय. Retrieved from https://uou.ac.in/sites/default/files/slm/MAED-201.pdf
- *निर्देशन एवं परामर्श.* उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय. Retrieved from https://www.uou.ac.in/sites/default/files/slm/MAPSY-204.pdf
- *निर्देशन एवं परामर्श की नवीन प्रवृत्तियाँ.* Retrieved from https://wandofknowledge.com/new-trends-in-guidance-counselling-in-hindi/